शोध प्रतिवेदन

"यातायात नैतिकता के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अध्ययन"

निर्देशिका
डॉ. शिप्रा गुप्ता
(रीडर)

प्रस्तुतकर्त्री
सुमन यादव
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)

(सत्र 2015-17)

1 प्रस्तावना :

अध्ययन में प्राप्त आंकडों के सांख्यिकीय विश्लेषण विवेचन एवं निष्कर्ष के पश्चात् सम्पूर्ण अध्ययन के विभिन्न पक्षों का परस्पर सम्बन्ध स्थापित करना शोध के लिए आवश्यक है। इसके अभाव में समस्या का विहंगम दृष्टि अवलोकन नही हो सकता और न ही मार्ग दर्शन संभव है।

विभिन्न परीक्षणों के आधार पर किए गये आंकड़ों के सांख्यिकीय विवेचन के पश्चात् अध्ययन के विविध उद्देश्यों एवं प्राकलपनाओं के संबंध में प्राप्त निष्कर्षो के मध्य परस्पर संबंध स्थापित करना शोध का आवश्यक चरण है। इसके अभाव में समस्या का व्यापक दृष्टि से न तो अभ्यास हो सकता है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन में सम्पूर्ण शोध के सम्बन्ध में किए गए विश्लेषण, व्याख्या एवं विवेचना से प्राप्त उपलब्धियों का निष्कर्षात्मक रूप प्रस्तुत करने हेतु समाधरात्मक विवेचन तथा परिणाम निष्पादन का प्रयास किया गया है।

अतः इस अधिकरण में प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर शोधकर्त्ती ने व्यापक दृष्टिकोण एवं विश्लेषण का प्रयोग करते हुये संकलित किये गये आंकड़ों के आधार पर निष्कर्ष एवं सुझावों का वर्णन इस अध्याय में किया गया है।

शिक्षा राष्ट्र में दीर्घकालीन विकास हेतु मानव शक्ति को तैयार करने का एक शक्तिशाली साधन है। शिक्षा किसी देश का आधार है। सीखनें और सीखानें की प्रक्रिया में तीन घटक कार्यान्वित होते है। शिक्षक शिक्षार्थी तथा पाठ्यवस्तु अध्यापन का कार्य शिक्षक द्वारा सम्पादित किया जाता है। शिक्षा के कार्य में निष्पादन सर्वाधिक महत्व का निवेश है। शिक्षा से सम्बन्धित प्रत्येक योजना का सफल क्रियान्वयन शिक्षकों के वैयक्तिक व्यवहार शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं व कार्यनिष्ठा पर निर्भर करता है।

यह सत्य है कि विद्यालय भवन पाठ्यवस्तु पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, पाठ्यपुस्तके, सामाजिक जागरूकता एवं नैतिकता आदि सभी शैक्षिक कार्यक्रम में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। परन्तु जब तक इनमें अच्छें शिक्षकों द्वारा जीवन शक्ति प्रदान नही की जाएगी तब तक ये निरर्थक ही रहेगी। शिक्षक ही वह शक्ति है। जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली संततियों पर अपना प्रभाव डालते हे। शिक्षक राष्ट्रीय एवं भौगोलिक सीमाओं को लांघकर विश्व व्यवस्था तथा मानव जाति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है।

आधुनिक तकनीक ने भारतीय परिवहन सेवा को नये आयाम प्रदान किये है। परिवहन नेटवर्क के विस्तार वृद्धि एवं व्यवस्थित और सुनिश्चित यातायात प्रणाली आवश्यक है और इसके लिए सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित ज्ञान भावी पीढ़ी को कराना आवश्यक हैं।

2 अध्ययन का औचित्य :–

आँकडो के अनुसार यह दर्ज किया गया है कि हर साल लगभग 1 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओ में मारे जाते है सडको पर आये दिन जाम की समस्या का सामना करना पडता है व्यक्ति अपने स्वार्थ या नासमझी के कारण यातायात नियमो को तोडता है खासकर युवा वर्ग।

गलत तरीके से ओवरटेकिंग, बेवजह हार्न बजाना निर्धारित लेन में न चलना और तेज गति से गाडी चलाकर ट्रैफिक कानूनो की अवहेलना आज धनादड्य

युवको का प्रमुख शगल बन गया है। देश में ऐसे बस मालिको, ड्राइवरो की कमी नही है, जो लालची है। उनकी प्राथमिकता बस पैसा कमाना है न कि यात्रियों की सुरक्षा पर ध्यान देना। वे व्यस्तम बस रूटो को रेस–ट्रेक समझते है एक –दूसरे के वाहनो को ओवरटेक करते है। गाडियो को आपस में भिडा देते है। ऐसे में यात्रियों की जान पर ही बन आती है। अतः इन पर अंकुश लगाने की जरूरत है। विकास के साथ – साथ जिस सड़क संस्कृति की जरूरत होती वह हमारे देश में अभी तक बन नही पाई है अतः भावी पीढी में यातायात नैतिकता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए ऐसे शिक्षको की आवश्यकता है जो प्रारम्भ विद्यालयी जीवन काल से की सड़क सुरक्षा, ट्रैफिक लाइट, हेलमेट की आवश्यकता आदि की जानकारी दे सके अतः शोधार्थी ने यातायात जागरूकता के प्रति जानकारी प्राप्त करने में रूचि प्रकट करते हुए शोध समस्या के रूप में इस समस्या का चयन किया है।

समस्या से उभरने वाले प्रश्न निम्नांकित है।

1. क्या वर्तमान समय में यातायात नियमों का उल्लंघन करना एक फैशन बन गया है?
2. क्या यातायात चिन्हो के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अभाव है ?
3. क्या सड़क सुरक्षा के प्रति शिक्षकों में जागरूकता न पाये जाने का कारण प्रशिक्षण काल के दौरान यातायात नियमों के प्रति जागरूक न करना भी एक कारण हो सकता है ?
4. क्या प्रशिक्षणार्थियों में प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान यातायात नैतिकता के प्रति जागरूकता बढाकर भावी पीढी को यातायात में नैतिकता के प्रति जागरूक किया जा सकता है।

3 समस्या कथन :–

"यातायात नैतिकता के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अध्ययन"

4 अध्ययन के उद्देश्य :–

1. यातायात नैतिकता के प्रति शिक्षक प्रशिक्षार्थियों मे जागरूकता का अध्ययन करना।

2. यातायात नैतिकता के प्रति महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अध्ययन करना।
3. यातायात नैतिकता के प्रति पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अध्ययन करना।
4. सड़क सुरक्षा कार्यक्रम के प्रति शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अध्ययन करना।
5. सड़क सुरक्षा कार्यक्रम के प्रति ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अध्ययन करना।
6. यातायात चिन्हों के प्रति शहरी महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अध्ययन करना ।
7. यातायात चिन्हों के प्रति ग्रामीण महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अध्ययन करना ।
8. यातायात चिन्हों के प्रति शहरी पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता का अध्ययन करना ।

5 परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध समस्या की निम्नांकित परिकल्पना प्रतिपादित की जाती है–

1. यातायात नैतिकता के प्रति शिक्षक प्रशिक्षार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।
2. यातायात नैतिकता के प्रति महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।
3. यातायात नैतिकता के प्रति पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।
4. सड़क सुरक्षा के प्रति शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।
5. सड़क सुरक्षा के प्रति ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।
6. यातायात चिन्हो के प्रति महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।
7. यातायात चिन्हों के प्रति पुरूष प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।

8. यातायात चिन्हो के प्रति महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में कोई अन्तर नहीं पाया जाता।

6 अनुसंधान की विधि :

अध्ययन विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्थानुसार अध्ययन प्रणाली से है जिसे एक अनुसंधानकर्त्ता अपनी अध्ययन वस्तु के सम्बन्ध में तथ्ययुक्त निष्कर्ष निकालने के लिए प्रयोग में लाता हैं जिसके अध्ययन कार्यो के संगठन तथ्यों की विवेचना तथा निष्कर्षो का निर्धारण किया जाता हैं अतः अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य के अवलोकन करने के पश्चात् अनुसंधानकर्त्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

7 सर्वेक्षण विधि :

यह अनुसंधान की एक वैज्ञानिक विधि है। इसके द्वारा किसी समस्या से सम्बनिधत तत्कालीन स्थिति ज्ञात करने में सहायता मिलती है। यह एक प्रकार का सम्पर्क अवलोकन है। इस विधि के अन्तर्गत घटना स्थल पर जाकर किसी विशेष घटना का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है तथा उसके सम्बन्ध में खो की जाती हैं

समाशास्त्र के शब्दकोष के अनुसार : जीवन स्तर को देखना या उसके किसी एक पहलू के संबंध में व्यवस्थित और सम्पूर्ण संकलन एवं तथ्य विश्लेषण करना ही सर्वेक्षण है।

8 प्रश्नावली :

सर्वेक्षण में प्रश्नावली के दौरान शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से यातायात के प्रति जागरूकता ज्ञात करने के लिये प्रश्नावली में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के कथनों को शामिल किया गया।

अध्ययन के चर :

प्रदत्तों के स्त्रोत :

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्तों के स्त्रोतों के रूप में जयपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें 2 शहरी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं 2 ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के 50–50 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है।

प्रदत्तों की प्रकृति :–

प्रयुक्त शोध प्रदत्तों की प्रकृति के रूप में मात्रात्मक प्रकृति व गुणात्मक प्रकृति थी।

परिसीमा :

क्षेत्र : प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के 2 शहरी व 2 ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तक सीमित रखा गया ।

विद्यार्थी : प्रस्तुत अध्ययन में 50 शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों एवं 50 ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों को शामिल किया गया।

जनसंख्या :

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों का जनसंख्या के रूप में चयन किया गया।

न्यादर्श :

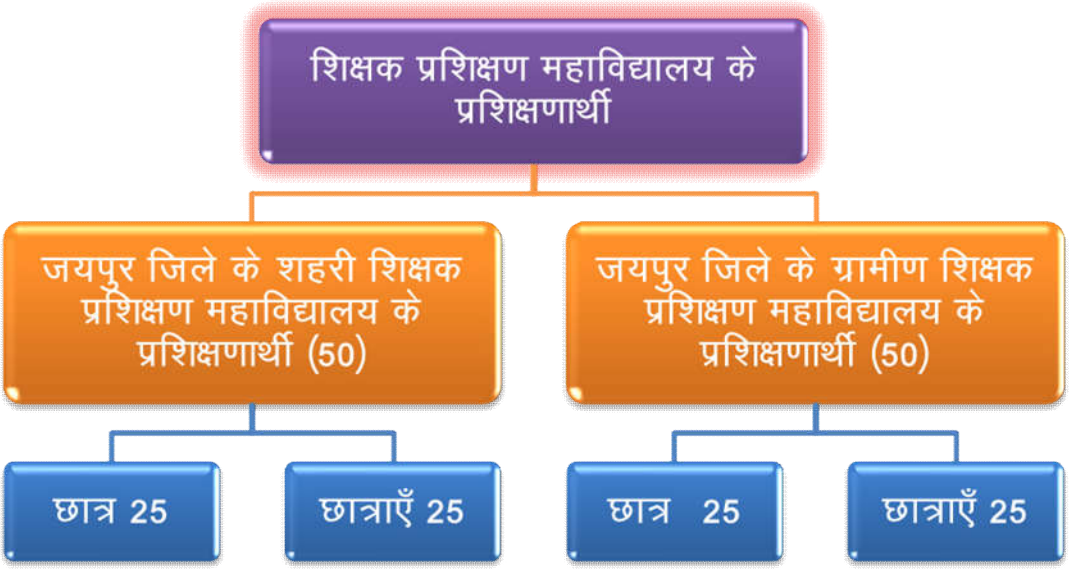

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों की प्रतिपृष्टि हेतु स्वनिर्मित उपकरण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया ।

शोध में सांख्यिकी :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांख्यिकी के रूप में **प्रतिशत** का प्रयोग किया गया।

प्रदत्त संचयन व विश्लेषण :

1. शोधकर्त्री द्वारा सर्वप्रथम जयपुर शहर का चयन किया गया जिसमें शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के लिए 100 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया।
2. शोधकर्त्री द्वारा शोध में उपकरण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया जिसमें 30 कथनों का निर्माण किया गया जो कि यातायात नैतिकता, सड़क सुरक्षा यातायात चिन्ह से सम्बन्धित थे। इस प्रश्न–पत्र को प्रशासित करने से पूर्व सभी विद्यार्थियों को सामान्य निर्देश दिये गये।
3. सभी विद्यार्थियों को प्रश्न पत्र के अनुरूप उत्तर देने के निर्देश दिये गये।
4. तत्पश्चात् प्रश्न पत्र का प्रशासन पूर्व नियोजित सूचना व कार्यक्रम के अनुसार किया गया।
5. प्राप्त आंकड़ों का संकलन कर उनका प्रतिशत ज्ञात किया गया।
6. प्रतिशत के आधार पर प्रत्येक पद का विवेचन किया गया।

7. प्रदत्तों का प्रदर्शन ग्राफ डायग्राम के आधार पर किया गया।

8. विवेचन के आधार पर निष्कर्ष व परिणाम प्राप्त हुए।

परिणाम :–

परिकल्पना 1 : **''यातायात नैतिकता के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।''** यातायात के प्रति शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 71.33 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 63.26 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं

परिकल्पना 2 : **''यातायात नैतिकता के प्रति महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।''** यातायात के प्रति शहरी महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 64 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी एवं ग्रामीण महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 5 6 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं

परिकल्पना 3 : **''यातायात नैतिकता के प्रति महिला पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।''** यातायात के प्रति शहरी पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 79.46 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी एवं ग्रामीण पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 70.93 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं

परिकल्पना 4 : **''सड़क सुरक्षा के प्रति शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।''** सड़क सुरक्षा के प्रति शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 79.46 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 64 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं

परिकल्पना 5 : **''सड़क सुरक्षा के प्रति ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।''** सड़क सुरक्षा के प्रति ग्रामीण

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 70.93 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 5 6 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं

परिकल्पना 6 : **''यातायात चिन्हों के प्रति महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।''** यातायात चिन्हों के प्रति शहरी महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 61.84 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 57.84 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं

परिकल्पना 7 : **''यातायात चिन्हों के प्रति पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।''** यातायात चिन्हों के प्रति शहरी पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 68.61 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी एवं ग्रामीण पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 64.30 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं

परिकल्पना 8 : **''यातायात चिन्हों के प्रति महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है।''** यातायात चिन्हों के प्रति शहरी महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 59.84 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 66.46 प्रतिशत जागरूकता पायी गयी अतः महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता में अन्तर पाया जाता है। यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने सांख्यिकी के द्वारा परिणामों का विवेचन व विश्लेषण किया है। सांख्यिकी विश्लेषण के उपरान्त शाोधकर्त्री को निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए ।

1. यातायात नैतिकता के प्रति शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है। जिसके अन्तर्गत शहरी शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में ग्रामीण शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक जागरूकता पायी गयी। जिसका कारण यह हो सकता है कि गांवों की अपेक्षा शहरों में ट्रैफिक सिग्नल अधिक है शहरों में ट्रैफिक सिग्नल का पालन न करने पर चालान काटा जाता है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसा कम होता है।
2. यातायात नैतिकता के प्रति महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है। जिसके अन्तर्गत शहरी महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में ग्रामीण महिला शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक जागरूकता पायी गयी। जिसका कारण यह हो सकता है कि अधिकांश शहरी महिला शिक्षक शिक्षण प्रशिक्षणार्थी स्वयं का वाहन चलाती है। जिसके कारण उनमें यातायात नियमों ट्रैफिक सिग्नलों आदि की अधिक जानकारी प्राप्त है।
3. यातायात नैतिकता के प्रति शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है। जिसके अन्तर्गत शहरी पुरूष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में ग्रामीण पुरूष शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। जिसका कारण यह हो सकता है कि दोनों ही वाहनों का उपयोग करते हैं शहरी व ग्रामीण पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थी दोनों को ही सड़क सुरक्षा, यातायात नियमों की जानकारी प्राप्त है।
4. सड़क सुरक्षा के प्रति शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है। जिसके अन्तर्गत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं शहरी महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। जिसका कारण यह हो सकता है कि पुरूष शिक्षण प्रशिक्षणार्थी महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक वाहन चलाते है। एवं पुरूष शिक्षण प्रशिक्षणार्थीयों में यातायात नियमों के अधिक जानकारी प्राप्त है।
5. सड़क सुरक्षा के प्रति ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है। जिसके अन्तर्गत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया गया। जिसका कारण यह हो सकता है कि पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थी को सड़क दुर्घटना से बचने

के लिए सुरक्षित ड्राईविंग को अपनाते है। एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को यातायात नियमों की कम जानकारी प्राप्त है।

6. यातायात चिन्हों के प्रति महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई गई है। महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में ग्रामीण महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना यातायात चिन्हों के प्रति अधिक जागरूकता पायी गई जिसका कारण यह हो सकता है कि शहरी क्षेत्रों में सडकों पर यातायात चिन्ह की अधिकता होती है जिसके कारण शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों यातायात चिन्हों की अधिक जानकारी होती है।

7. यातायात चिन्हों के प्रति पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि यातायात चिन्हों के प्रति पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में जागरूकता पाई जाती है। जिसका कारण यह हो सकता है कि ट्रैफिक चिन्हों की जानकारी पुरूष शिक्षक प्रशिक्षार्थी को है साथ ही ड्राइव करते समय इन चिन्हों को ध्यान में रखा जाता है।

8. यातायात चिन्हों के प्रति महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर पाया जाता है जिसका कारण यह हो सकता है कि महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में कम ड्राइव करती है और यदि वह स्वयं के वाहनों का उपयोग करती है तो वह भी सीमित क्षेत्र में करती है जबकि पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों अधिक दूरी एवं हाइवे पर भी स्वयं ड्राइव करते है। जिसके कारण पुरूष प्रशिक्षणार्थी को यातायात चिन्हों की अधिक जानकारी होती है।

शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ :

समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र आदि विषयों से सम्बन्धित शोध प्रयास तब तक अर्थपूर्ण नही होते जब तक कि इनका सम्बन्धित क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्षो एवं परिणामों का शैक्षिक निहितार्थ न हो, नही तो शोधकर्त्ती द्वारा किया गया शोधकार्य व्यर्थ चला जाता है। अतः प्रस्तुत शोध के शिक्षा में निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ होंगे।

1. शिक्षक प्रशिक्षणार्थी एवं विद्यालयी विद्यार्थी : प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध प्रशिक्षणार्थियों एव विद्यार्थी को सड़क सुरक्षा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त

करने के लिए प्रेरित कर सकेगा जिससे सड़क दुर्घटनाओ में कमी लाकर सुरक्षित वाहनों के ड्राइव करने के लिए प्रेरित किया जा सकेगा साथ ही शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं विद्यार्थियों को यातायात नियमों की और अधिक जानकारी व उपयोगिता के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

2. **समुदाय** : प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध प्रशिक्षणार्थियों एव विद्यालयी विद्यार्थियों द्वारा नुक्कड नाटक एवं जागरूकता रैलिया द्वारा समाज के लोगों को जागरूक कर सकेंगे जिससे उन्हें सुरक्षित वाहन साधनों के उपयोग करने में लाभों व दुर्घटनाओं के दुष्परिणामों की जानकारी प्राप्त करायी जा सकेगी।
3. **ग्रामीण** : प्रस्तुत लघु शोध द्वारा ग्रामीण इलाकें में जिन लोगों को यातायात नियमों एवं ट्रैफिक सिग्नलों की जानकारी बहुत ही कम है उनकी जानकारी को बढाया जा सकेगा साथ ही सडक सुरक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत पंचायत समितियों एवं ग्रामीण क्षेत्र के स्वयंसेवकों को यातायात जागरूकता बढानें के लिए प्रेरित किया जायेगा।
4. **महिला** : प्रस्तुत लघु शोध द्वारा महिलाओं को यातायात के प्रति जागरूक एवं ट्रैफिक नियमों का पालन करके सुरक्षित ड्राइव करने के लिए महिलाओं व छात्राओं को प्रेरित किया जा सकेगा।

भावी शोध हेतु सुझाव :–

कोई भी शोधकार्य अपने आप में सम्पूर्णता लिये नही हो सकता प्रस्तुत शोध कार्य भी यातायात नैतिकता के प्रति शिक्षक प्रशिक्षाणार्थियों में जागरूकता जानने का एक लघु प्रयास है भावी शोधकर्त्ती इस सम्बन्ध के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर गौर कर सकते है।

1. प्रस्तुत अध्ययन में केवल यातायात नैतिकता के प्रति जागरूकता का अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों पर किया हे जबकि यातायात नैतिकता के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का भी अध्ययन किया जा सकता है।

2. प्रस्तुत शोध कार्य में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों तक ही सीमित रखा गया है। जबकि यह भावी शोधकार्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता हैं।
3. प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श 100 लिया गया है। जबकि भावी शोध कार्य विस्तृत न्यादर्श लेकर किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध कार्य में यातायात नैतिकता के प्रति जागरूकता का अध्ययन केवल शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के संदर्भ में ही किया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य व्यवसायों में कार्यरत कर्मचारियों की यातायात नैतिकता के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया जा सकता है।
5. प्रस्तुत शोध कार्य यातायात नैतिकता के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है। जबकि '' सड़क सुरक्षा '' कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन एवं माध्यमिक स्तर के संस्थानों में यातायात के प्रति जागरूता स्तर का आंकलन इत्यादिन प्रकरणों का भी अध्ययन किया जा सकता है।
6. भावी शोध माध्यमिक स्तर पर यातायात नियमों की आवश्यकता एवं महत्व का अध्ययन कर सकता है।
7. भावी शोध कार्य सरकार द्वारा सड़क सुरक्षा सप्ताह चलाये गये कार्यक्रमों का युवाओं पर पड़नें वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर सुझाव :–

- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान सह–शैक्षिक गतिविधि में सड़क सप्ताह सुरक्षा की जानकारी देना शामिल किया जाये।
- शिक्षक प्रशिक्षक द्वारा रैलियाँ एवं सड़क सुरक्षा जनजाग्रति जैसे फिल्ड वर्क कार्य करे।
- सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियमों आदि प्रकरणों पर कार्यशक्ति व सेमीनार आयोजित किये जाये जिससे भावी शिक्षकों में सड़क सुरक्षा कार्यक्रमों की जानकारी हो जिससे वह स्वयं जागरूक हो भावी पीढ़ी को जागरूक करने में सहयोग प्रदान करें।

- ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात नियमों के जागरूकता लाने के लिए ग्राम पंचायतों में सरकार द्वारा शिविर लगाये जाये।
- महिलाओं व छात्रों को यातायात नियमों का पालन करने एवं सड़क सुरक्षा की जानकारी ट्रैफिक महिला कर्मचारियों द्वारा समय – समय पर दी जाये।
- सड़क सुरक्षा पर पोस्टर, निबन्ध, प्रतियोगितायें आयोजित की जाये।
- विद्यालय मे मॉडल बनाकर सड़क क्रॉस करना सीखना, बच्चों को साथ ले जाकर वास्तविक परिस्थितियों से अवगत करना, रोल मॉडल तैयार करके विद्यालय विद्यार्थी के सड़क सुरक्षा की जानकारी दी जाये।

उपसंहार :

प्रस्तुत शोधकार्य शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की यातायात नैतिकता के प्रति जागरूकता से समबन्धित है। शिक्षक प्रशिक्षणार्थी जो कि भावी शिक्षक है वे इस राष्ट्र के भाग्य विधाता है यदि शिक्षक प्रशिक्षणार्थी सड़क सुरक्षा, यातायात, जागरूकता के अभियान को गंभीरता से लेते हुए अपना शत प्रतिशत योगदान प्रदान करेंगे तो वो दिन दूर नही जब 2020 तक सड़क दुर्घटनाओं में 50 प्रतिशत की कटौती हो जायेगी। यातायात नैतिकता के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के जागरूकता को प्रदर्शित किया है शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों इस इसी जागरूकता को ध्यान में रखकर शोधकर्त्ती कुछ सुझाव प्रेषित कर रही है यदि उन्हें ध्यान में रखा जाये तो यातायात जागरूकता व सड़क सुरक्षा अभियान की सफलता निश्चित रूप से संभव है।

1.दुर्घटनाओं में कमी लाने और रोड सेफ्टी के प्रति लोगों को जागृत करने के लिए यातायात जागरूकता कार्यक्रमों को एक लघु फिल्म के रूप में मीडिया के साधनों द्वारा महाविद्यालय में नियमित रूप से प्रसारित करना चाहिए।

2.सड़क सुरक्षा समय का पहल राज्यस्तरीय जैसी कार्यशाला का आयोजन किया जाना चाहिए।

3.एन.जी.ओ. द्वारा चलाए सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम संबंधी पायलट प्रोजेक्ट्स कार्यक्रमों की रूपरेखा बनायी जाये।

4.रोड़ सेफ्टी पर नुक्कड़ नाटक, जागरूकता रैलियों आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।

5.ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क यातायात व्यवस्था सुधारनें के लिए ट्रैफिक लाइटों का उपयोग किया जावें।

6.विभाग प्रदेश की हर पंचायत में सड़क सुरक्षा के प्रति लोगों को जागृत करने के लिये स्वयं सेवक को तैयार किया जाये।

7.जनप्रतिनिधियों, शिक्षकों स्वयंसेवी संस्थाओं व विद्यार्थियों को सुरक्षित सड़क उपयोगकर्त्ता बनने और सड़क सुरक्षा के प्रति जनचेतना जागृत करने में सहयोग देने का संदेश देना चाहिए।

8.सड़क सुरक्षा सम्बन्धी कार्यशालायें, निबंध प्रतियोगिता, स्लोगन व पोस्टर प्रतियोगिताएँ आयोजित कि जानी चाहिए।

9.ग्रामीण क्षेत्रों एवं महिलाओं को यातायात जागरूकता प्रतिशत बढ़ानें के लिए यातायात व सडक सुरक्षा कार्यक्रम आयोजित किया जाये जिसमें महिलाओं व ग्रामीण क्षेत्र को सम्मिलित किया जावें।